DR. SUMAN LAL RAY
Guest Assistant Professor
S.R.A.P. College, Bara chakia
(Deptt. of Sanskrit)
BRABU - Muzaffarpur

B.A. (Hons.) Part — II
Subject - Sanskrit
Paper — III

14×2 = 28 Marks

आलोचनात्मक प्रश्नोत्तर (कादम्बरी से)

2. कथा और आख्यायिका के अन्तर स्पष्ट करते हुए यह सिद्ध करें कि कादम्बरी कथा है।

उत्तर — कथा और आख्यायिका — ये दो शब्द बहुत प्राचीन हैं। इन दोनों शब्दों के अन्तर स्पष्ट करने का प्रयास संस्कृत साहित्य के विद्वानों ने अपने-अपने ग्रन्थों में अवश्य किया, परन्तु बाणभट्ट से पूर्व किसी विद्वान ने इन दोनों शब्दों के भेद को स्पष्ट नहीं किया। कथा का सम्बन्ध उन कहानियों से है जो परम्परा से श्रुतकारि आयी है। इस प्रकार सुकन्या-च्यवन की कथा, नल दमयन्ती की कथा, सावित्री-सत्यवान की कथा आदि प्रचलित हैं।

जहाँ कहीं भी ऐसा कहा गया है — 'यत्रेयम् आख्यायिका' — वहाँ सिद्ध कथन द्वारा किसी बात को सत्यापित करने का प्रयास किया गया है। इस आधार पर इस तथ्य के परिप्रेक्ष्य में हम कादम्बरी का विश्लेषण करते हैं।

कादम्बरी बाणभट्ट की पूर्णतः कल्पित कथा है। महाभारतादि अथवा पुराणों में इस कथा का कोई स्रोत नहीं है। अतः असंदिग्ध रूप से यह सर्वविदित है कि कादम्बरी कथा है। अलंकारशास्त्र में कथा और आख्यायिका का भेद करते हुए कहा गया है — 'आख्यायिका कथास्यात् कवेर्वंशानुकीर्तनम्।"

अन्य बातों में आख्यायिका कथा के समान ही है। पार्थक्य इस बात में है कि आख्यायिका में कवि या लेखक अपने वंश का विस्तार से वर्णन करता है। बाणभट्ट कृत दो गद्यकाव्य हैं — एक हर्षचरित और दूसरा कादम्बरी। हर्षचरित में बाणभट्ट ने अपने वंश का सविस्तार वर्णन किया है। इस दृष्टि से हम निश्चित रूप से हर्षचरित को आख्यायिका कह सकते हैं।

उपनिषद् आदि ग्रन्थों को देखने से पता चलता है कि आख्यायिका किसी सिद्ध कथन का आख्यान है कवि कल्पित कथन का नहीं। चूँकि हम जानते हैं कि जहाँ कहीं भी 'यत्रेयमाख्यायिका' कहकर कोई कथा कही जाती है, वह कथा सिद्ध कथन का उपन्यास है।

कथा में सारी बातें कवि कल्पना प्रसूत होती हैं। ऐतिहासिक अथवा यथार्थ घटनाओं से उसका कोई सम्बन्ध नहीं होता है। इस प्रकार ऐतिहासिक इतिवृत्त के आधार पर जो कथा कवि कल्पित होती है उसे आख्यायिका कहते हैं। राजा हर्ष एक ऐतिहासिक पुरुष थे। उनकी कथा को कवि ने अपने शिल्प से जो रोचकता एवं हृदयग्राह्यता प्रदान की है

वही "हर्षचरित" की विशेषता है। अर्थात् यथार्थ और कविकल्पना-दोनों का पुट आख्यायिका में होता है, किन्तु कथा में केवल कल्पना का साम्राज्य होता है। काव्य के जितने सारे रूप कवि उड़ेल सकता है, इसकी पूरी स्वतन्त्रता कथा में होती है। आख्यायिका में कवि या लेखक यथार्थ से जकड़ा रहता है। इसलिए कल्पना सौष्ठव का विवरण उसमें नहीं हो पाता। अपनी सर्वोत्तम काव्य प्रतिभा का प्रदर्शन करने के लिए कथा ही एक क्षेत्र कवि के लिए सुरक्षित है।

अलंकारशास्त्री भामह के अनुसार आख्यायिका कई उच्छ्वासों में विभक्त होती है तथा प्रत्येक उच्छ्वास के आदि या अन्त में भावी घटना-सूचक पद्य वक्त्र अथवा अपरवक्त्र छन्द में लिखे होते हैं। परन्तु कथा में उच्छ्वास आदि का विभाजन नहीं होता है और न वक्त्र या अपरवक्त्र की विनियोजना ही होती है। इस आधार पर भी विचार करने पर कादम्बरी कथा सिद्ध होती है।

सुबन्धु, बाणभट्ट, कविराज एवं दण्डी आदि गद्यकार कथासाहित्य के अग्रणी कवि हैं और इन सबों में श्रेष्ठ महाकवि बाणभट्ट माने जाते हैं। बाणभट्ट की कादम्बरी कथासाहित्य में अग्रपंक्ति में रखी जाती है। ~~यद्यपि आचार्यों का विचार है कि कथा और आख्यायिका में कोई मौलिक अन्तर नहीं है किन्तु~~

यद्यपि आचार्यों का विचार है कि कथा और आख्यायिका में कोई मौलिक अन्तर नहीं है, फिर भी उपर्युक्त विवेचन से यह स्पष्ट है कि आख्यायिका को तथ्यपरक एवं अकाल्पनिक ऐतिहासिक अर्द्धऐतिहासिक कथा को लेकर लिखा जाता है। इसमें कवि या लेखक अपनी आत्मकथा का विनियोग भी कर सकता है, परन्तु कथा सर्वथा कल्पनाप्रसूत होती है। रुद्रट एवं विश्वनाथ के लक्षणों की रचना बाणभट्ट की कृतियों पर ही आधारित है क्योंकि उदाहरण के रूप में बाण की रचनाओं का ही उल्लेख इनमें किया गया है। इस कसौटी पर बाणभट्ट की कादम्बरी सर्वतोभावेन कथा सिद्ध होती है।

— o —